International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 24-04-2024, Accepted: 17-05-2024, Published: 10-06-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 17-19

कोरोना महामारी की निपटने की नीति ''भीलवाड़ा मॉडल के संदर्भ में''

डॉ. मोहित कुमार नायक
पोस्ट डॉक्टरल शोधार्थी, लोक प्रशासन विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
विश्व में कई प्रकार की अप्रत्याशित महामारियो ने लोगों को प्रभावित किया। कोरोनावायरस पूरे विश्व के लिए एवं विशेष तौर पर हमारे देश के लिए महत्वपूर्ण सबक के रूप में था, भविष्य में प्रशासनिक दृष्टि से हमारी सरकारों को ऐसी अप्रत्याशित महामारियों से निपटने के लिए कई प्रकार के नई परिस्थितियों का निर्माण करना होगा एवं इससे संबंधित संस्थाओं के अलावा पुलिस में भी प्रशिक्षण के माध्यम से ऐसी परिस्थितियों से निपटने के लिए नई तकनीकियों का विकास किया जाना चाहिए। कोरोनावायरस ने पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था पर एक गहरा वार किया। इस महामारी ने कई देशों को आर्थिक रूप से अपंग कर दिया। भारत में इस विपरीत परिस्थिति से लड़ने के लिए कई प्रकार के कदम उठाए।भारत जब कोरोना महामारी से संघर्ष कर रहा था उसे दौरान राजस्थान का भीलवाड़ा मॉडल पूरे हिंदुस्तान के लिए एक पथप्रदर्शक के रूप में विकसित हुआ जिसके मापदंडों ने इस विपरीत परिस्थिति में लड़ने के लिए हमें रास्ता दिखाया।

मूलशब्द: भीलवाड़ा मॉडल, कोरोना महामारी, पुलिस, प्रशासन, लॉकडाउन, वायरस, राजस्थान, संकट

आलेख परिचय

रोजमर्रा की जिंदगी में व्यक्ति अपने दिनचर्या के अनुसार अपने कार्यों को प्रतिदिन करते आ रहे हैं। मनुष्य के जीवन में कई ऐसी समस्याएं आती है जिनका सामना वह करने की कोशिश करता है। मनुष्य जीवन के लिए कोरोनावायरस 2019 के समय ख़ौफ़ के रूप में उठा बहुत बड़ा तूफ़ान था। कई निजी संगठनों ने आर्थिक रूप से पिछड़े इलाकों में खाने के पैकेट्स, आवश्यक वस्तुओ को पहुंचाने के लिए हर संभव प्रयास किये। राजनीतिक संगठनों ने भी अपनी भूमिका दलगत राजनीति से ऊपर उठकर की। दिहाड़ी मजदूर की समस्याओं की आपूर्ति के लिए कई प्रकार के लोगों ने आगे आकर सहायता की। यह महामारी समस्त विश्व के लिए एक कठिन समय था जिसे जीतने के लिए हर सरकार और सरकार के सभी अंग के साथ सभी आम जन भी सहयोग किया।1 कई रिपोर्ट्स के मुताबिक चीन के वुहान में पहला मानव संक्रमण रोगी पाया गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आधिकारिक प्रकाशनों में इसकी सूचना को प्रकाशित किया गया। दिसंबर 2019 तक कोरोना का संक्रमण मानव से मानव संक्रमण द्वारा संचालित था एवं 20 दिसंबर 2019 के आसपास कोरोनावायरस के संक्रमित मनुष्य की संख्या 60 के आसपास पहुंच गई। 12 जनवरी 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वुहान में लोगों के एक समूह में कोरोनावायरस नामक बीमारी होने की पुष्टि की। 2 भारत में सबसे पहले केरल में कोरोनावायरस का पहला मामला 30 जनवरी 2020 को दर्ज किया गया। फरवरी की शुरुआत तक यह संख्या 3 हो गयी । यह सभी छात्र वुहान (चीन) लौटे थे। तत्पश्चात धीरे–धीरे कोरोनावायरस देश के कोने कोने में फैल गया एवं कई लोग इस बीमारी की चपेट में आ गए। 2021 में कोरोनावायरस की दूसरी लहर शुरू हुई। भारत में जनवरी 2021 से कोविशील्ड एवं कोवैक्सीन के साथ अपना टीकाकरण कार्यक्रम शुरू किया। बाद में स्पूतनिक वी और मॉडर्ना वैक्सीन को भी आपातकालीन उपयोग के लिए मंजूरी दे दी गई। इस विपरीत परिस्थिति में भारत के नागरिकों ने जीवन की सबसे बड़ी कठिनाइयों का सामना किया। सरकार द्वारा कई प्रकार के प्रतिबंध लगाए गए। लॉकडाउन जिससे मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बाहर जाने से भी भयभीत था। राजस्थान में कोरोनावायरस से निपटने के लिए राज्य सरकार के सभी प्रशासनिक अधिकारी, राजस्थान पुलिस के अधिकारी एवं जवान, नागरिक सेवा समूह, एवं विभिन्न संगठनों द्वारा कई प्रकार के जनहित के कार्य किए गए।

भीलवाड़ा मॉडल के संदर्भ में

मार्च माह तक देश में कोरोना विभिन्न स्थानों पर संक्रमण के रूप में फैल रहा था। राजस्थान में भीलवाड़ा में कोरोना के संक्रमण का पहला मामला एक निजी अस्पताल के एक चिकित्सक के रूप में मिला। भीलवाड़ा जिले में कोरोना के प्रकोप का केंद्र यह निजी अस्पताल था जहां सबसे पहले एक डॉक्टर का सकारात्मक परीक्षण हुआ तत्पश्चात 21 मार्च को 5 ओर मामले सामने आए और 23 मार्च तक यह संख्या 13 के आसपास पहुंच गई। कोरोनावायरस के सकारात्मक परीक्षण आने वाले लोगों में अधिकांश लोग निजी अस्पताल के कर्मचारी एवं मरीज थे। 25 मार्च तक यह आंकड़ा 17 तक पहुंच गया। फिर प्रशासन ने उसी दिन निजी अस्पताल के आसपास के 1 किलोमीटर के क्षेत्र को सील कर दिया। एवं इस क्षेत्र को शून्य गतिशीलता क्षेत्र घोषित कर दिया। जिले में पहली मौत 26 मार्च को 73 वर्षीय एक व्यक्ति की हुई जो कोरोनावायरस से संक्रमित था। उसी दिन ही दूसरी मौत एक 60 वर्षीय व्यक्ति की हुई। इस समय भीलवाड़ा जिला कोरोनावायरस के संकट के सामने खड़ा था क्योंकि यहां पर लगातार कोरोनावायरस के सकारात्मक मामले बढ़ते जा रहे थे। प्रशासन ने जल्द ही भीलवाड़ा में बढ़ते कोरोना संक्रमण को रोकने के लिए स्वास्थ्य विभाग और जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वाधान में लगभग 850 टीमों का गठन किया जिन्होंने भीलवाड़ा के 56025 घरों में जाकर 280937 लोगों का सर्वेक्षण किया। प्रशासन द्वारा कोरोनावायरस के संदिग्ध लोगों को क्वारंटाइन रखा गया साथ ही उन रोगियों के गहन संपर्क में आए लोगों का भी पता लगाया गया। इस संबंध में प्रशासन द्वारा सभी लोगों का विस्तृत चार्ट तैयार किया गया। प्रशासन ने संपूर्ण भीलवाड़ा जिले में पूर्ण लॉकडाउन लगाकर सर्वेक्षण में स्वास्थ्य विभाग का साथ दिया। साथ ही स्थानीय पुलिस ने लॉकडाउन के दौरान कर्फ्यू का सख्ती से पालन करवाया। 30 मार्च के बाद कोरोना के मामलों में कमी आई। जिले में 3 अप्रैल से 10 दिवसीय तीव्र कर्फ्यू की अवधि में प्रवेश किया जिसमें भीलवाड़ा के जिला कलेक्टर राजेंद्र भट्ट ने दवा और किराने की दुकान जैसी आवश्यक सेवाओं को भी बंद रखा। ऐसी स्थिति में पुलिस के

जवानों ने जनता को उनके दरवाजों पर आवश्यक वस्तुओं को पहुंचाकर उनके आपूर्ति को सुनिश्चित किया।4 भीलवाड़ा के जिला प्रशासन के सामने सबसे बड़ी चुनौती शुरुआती संक्रमण के बाद मामलों की बढ़ती संख्या को रोकना था। निजी अस्पताल में जिन डॉक्टर का कोरोनावायरस सकारात्मक परीक्षण किया गया था वह कर्मचारी और रोगी सहित कई आमजन के संपर्क में आए थे जो उस अवधि के दौरान अस्पताल में आए थे। इन मरीजों में कई मरीज दूसरे प्रदेश से भी आए थे। इसके अलावा प्रशासन के सामने डॉक्टर नर्स और पूरी टीम को इकट्ठा करने का भी एक मुश्किल भरा काम था जो भीलवाड़ा के प्रत्येक घर में सर्वेक्षण करने के लिए गए थे। प्रशासन के लिए यह आपदा अचानक वाला झटका थी। 5कुछ ही दिनों में 22 लाख से अधिक घरों पर सर्वेक्षण करना एक बहुत बड़ी चुनौती थी। ग्रामीण इलाकों के लिए विशेष तौर पर हेल्पलाइन सेवा की उपलब्धता कराई गई जिसके अंतर्गत 6 कंट्रोल रूम की व्यवस्था जिला प्रशासन के कार्यालयो में की गई। भीलवाड़ा में आए इस प्रकोप पर नियंत्रण के लिए भीलवाड़ा मॉडल की सफलता के लिए राज्य सरकार द्वारा सकारात्मक समन्वय के माध्यम से भीलवाड़ा जिला प्रशासन को हर संभव सहायता दी गई। मुख्यमंत्री,स्वास्थ्य मंत्री एवं वरिष्ठ नौकरशाहों ने जिला प्रशासन के साथ समन्वय स्थापित करते हुए भीलवाड़ा को कोरोना के प्रकोप से बचने हेतु प्रयास किये। 6 भीलवाड़ा में जब संक्रमण के प्रकोप की जानकारी प्रशासन के पास पहुंची। बड़े स्तर पर जब सर्वेक्षण किया गया सर्वेक्षण के पश्चात क्वॉरेंटाइन मैं रखे गए लोगों की निगरानी मोबाइल की ऐप के द्वारा भी की गई। इस ऐप के माध्यम से क्वॉरेंटाइन घर का कोई भी सदस्य बाहर निकलता है तो उसकी जानकारी कंट्रोल रूम में मिल जाती थी।कोरोना नियंत्रण के लिए भीलवाड़ा मॉडल की चर्चा जोरों पर रही। भीलवाड़ा की इतनी कम आबादी में कोरोना का संक्रमण तीव्र गति से फैल गया था।7 जिला प्रशासन द्वारा अधिक से अधिक जांच एवं संक्रमित रोगियों को अलग–अलग करने और सुरक्षित दूरी जिसे कदमों से कोरोना पर नियंत्रण पाया जा सका। इसके अलावा लॉकडाउन की सख्ती नियंत्रण के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभरी। बड़ी संख्या में टीमों का गठन एवं टीमों के नियंत्रण के लिए नियंत्रण कक्ष इस मॉडल की सबसे महत्वपूर्ण पहचान है।खाद्य आपूर्ति के लिए अतिरिक्त व्यवस्था,संदिग्ध मरीजों की गहनता से जांच करना ऐसे कई कदम भीलवाड़ा मॉडल की पहचान है। भीलवाड़ा का यह प्रयास हमारे देश एवं हमारे समक्ष देश के लिए एक बहुत बड़ी मिसाल था। राजस्थान का भीलवाड़ा जैसा गुमनाम जिला विश्व के लिए एक रास्ता दिखाने वाला जिला बन गया। कई विशेषज्ञों ने माना कि भीलवाड़ा मॉडल पर अगर कार्य नहीं हुआ होता तो देश में इटली से भी भयानक स्थिति आ जाती।लॉकडाउन ने कोरोना की समस्या से निदान पाने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया इसके अलावा लॉकडाउन की वजह से पर्यावरण की स्वच्छता में भी सुधार पाया गया। लॉकडाउन के कारण सड़कों पर वाहनों की कमी से पर्यावरण का प्रदूषण नग्न अवस्था में हो गया।8भीलवाड़ा की तत्कालीन कलेक्टर राजेंद्र भट्ट ने माना कि कोविड–19 को हराने का एकमात्र तरीका निर्मम नियंत्रण है। सामुदायिक संक्रमण के चरण में प्रवेश का खतरा भीलवाड़ा के लिए बहुत ही घातक था।चिकित्सा कर्मियों के परीक्षण के उपरांत जो परिणाम आए वह बहुत घातक थे, इस विपरीत परिस्थिति में जन सहयोग के माध्यम से इस स्थिति पर काबू पाना बहुत मुश्किल कार्य था। पूरे जिले की सीमा की तालाबंदी पुलिस प्रशासन द्वारा सख्ती से नियंत्रण, प्रशासन का संक्रमण में आए लोगों की पहचान करना इन सभी बिंदुओं पर कार्य करके पूरे जिले के लोगों का परीक्षण करके संक्रमित लोगों को घर में सुरक्षित बंद करके वायरस से लिजर्ड पाने के लिए कार्य किया गया। भीलवाड़ा जिले की सीमाएं निजी वाहनों के लिए सील कर दी गई। बस सेवा में पूर्ण रूप से बंद कर दी गई। सभी प्रतिष्ठानों को बंद करने का निर्देश दिया गया यहां तक की दिहाड़ी मजदूर के कार्यों पर भी रोक लगा दी गई। जब शुरुआत के समय मामलों की संख्या जब बड़ी तो जिले में तनावपूर्ण स्थिति बन गई। भीलवाड़ा जिले को राजस्थान का वूहान और इटली बताया गया।सख्त रोकथाम के माध्यम से इस वाइरस को कुछ हद तक रोका जा सकता था। कई प्रकार की आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के लिए प्रशासन ने जो भूमिका निभाई वह काबिले तारीफ थी।जिला कलेक्टर राजेंद्र भट्ट का कहना था कि संक्रमित लोगों को आइसोलेट करके चौन ब्रेक करेंगे तभी हम वायरस पर काबू पा सकेंगे।हमारा मकसद इस चौन को ब्रेक करना है।

निष्कर्ष

कोरोनावायरस विश्व के लोगों के लिए एक अप्रत्याशित घटना थी। कोरोना ने मनुष्य जीवन को अनेक प्रकार के सबक दिए जिसमें लॉकडाउन की विपरीत परिस्थितियों, शिक्षा के लिए ऑनलाइन व्यवस्था आदि अनेक प्रकार की व्यवस्थाओं ने कोरोना के समय जन्म लिया। भारत में कोरोना के लिए प्रशासन के साथ–साथ देश के नागरिकों ने भी इस लड़ाई को लड़ने में अपना योगदान दिया। देश की माननीय प्रधानमंत्री द्वारा समय–समय पर देश के नाम संबोधन से लोगों को एकता का संदेश एवं इस विपरीत परिस्थितियों से लड़ने की हिम्मत दी। कोरोना से निपटने के लिए देश में भीलवाड़ा मॉडल सबसे कारगर मॉडल साबित हुआ। भीलवाड़ा के जिला कलेक्टर राजेंद्र भट्ट ने बड़े स्तर पर सर्वेक्षण एवं कर्फ्यू जैसे कदमों को उठाकर पूरे विश्व को एक रास्ता दिखाया। भीलवाड़ा के मॉडल ने इस विपरीत परिस्थिति से लड़ने के लिए विश्व को एक नई दिशा की और प्रेरित किया।भीलवाड़ा मॉडल कोरोना के खिलाफ लड़ाई में एक महत्वपूर्ण कदम था जिसने लोगों को इस विपरीत परिस्थिति में लड़ने के लिए एक रास्ता दिखाया। सरकारे इस विपरीत परिस्थिति में बीना जाने सहयोग से ऐसी महामारियों पर काबू नहीं पा सकती। इस महामारी ने आमजन में पुलिस के प्रति जो उनके विचार थे उसमें परिवर्तन ला दीए। कई पुलिस कर्मियों ने इस विपरीत परिस्थिति में लोगों की मदद की। कई स्वयंसेवी संस्थान इस मुहिम में अग्रसर रहे। लोगों को खाद्य आपूर्ति एवं कई आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति कीजिए जो कदम उठाए गए वह भविष्य के लिए महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक कदम रहेंगे। भीलवाड़ा की विपरीत परिस्थिति में सरकार एवं जिला प्रशासन का योगदान पूरे देश में चर्चा में रहा जिसे देश के आदरणीय प्रधानमंत्री ने भी सराहा। और इसी तर्ज पर कई संक्रमणकालिक क्षेत्र में कोरोना के खिलाफ लड़ाई लड़ी गई। कोरोनावायरस से लड़ाई देश के लोगों के लिए एक जंग के समान थी। धीरे–धीरे समय गुजरते वैक्सीन के माध्यम से लोगों को राहत दी गई।

संदर्भ सूची

1. ''कोविड–19 का प्रकोपः एक सिंहावलोकन'' National Library of Medicine, वॉल्टर क्लूवर, 2020 मार्च।
2. ''भारत में COVID-19 संक्रमण का पहला पुष्ट मामलाः एक केस रिपोर्ट'', भारतीय चिकित्सा अनुसंधान जर्नल, एंड्रूयज, मई 2020
3. समझायाः कोरोनोवायरस को रोकने के लिए 'क्रूर रोकथाम' का 'भीलवाड़ा मॉडल', The Indian Express, दीप मुखर्जी, 11 अप्रैल 2020
4. अंडरस्टैंडिंग द भीलवाड़ा मॉडल ऑफ कोविड–19 कन्टेनमेंट, इन्वेस्ट इंडिया, देविका चावला, अप्रैल 2020

5. द बेनिफिट्स ऑफ भीलवाड़ा मॉडल,जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी साईकल रीसर्च, गुरुप्रसाद मुथुसेशन, अप्रैल 2021
6. कोरोनाः राजस्थान का भीलवाड़ा सेंटर क्यों बन रहा, BBC NEWS, मोहर सिंह मीणा, 31 मार्च 2020
7. भीलवाड़ा मॉडल, द वीक,राजेंद्र भट्ट, अप्रैल 2020
8. https://www.jansatta.com/chopal/strict-curfew-in-bhilwara-shops-remained-closed-police-ensured-doorstep-supplies-to-the-public/1376427/